'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०८ | वाराणसी, मंगलवार, २२ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

सिंगपुरा (कश्मीर) ३१-७-'५९

प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही !

स्वामी रामतीर्थ की मशहूर कहानी है। वह हमने बचपन में सुनी थी। उसका हमपर बहुत असर है।

स्वामीजी जा रहे थे अमेरिका। बंदरगाह नजदीक आ रहा था। हर कोई अपना-अपना सामान इकट्ठा करने लगा। लेकिन वे ऐसे ही बैठे रहे और देखते रहे कि दूसरे लोग सामान कैसे-कैसे इकट्ठा करते हैं और दौड़ते हैं। बंदरगाह आया। जहाज किनारे लगा। उन्होंने देखा, बहुत बड़ा समूह वहाँ खड़ा था। आये हुए लोगों को रिश्तेदार 'रिसीव' कर रहे थे। वहाँ इतना होहल्ला हो रहा था, लेकिन वे ऐसे ही देखते रहे, शांत! खामोश !! इतने में एक जवान अमेरिकन लड़की वहाँ आयी। उसने उन्हें देखा तो उसे लगा कि यह कैसा अजीब जानवर है! इसे कोई भी ख्वाहिश, तमन्ना है या नहीं?

आखिर उससे न रहा गया और वह उनके पास जाकर पूछने लगी "आप कहाँसे आये हैं? कौन हैं?"

स्वामीजी ने जवाब दिया "मैं हिंदुस्तान का फकीर हूँ।"

"क्या यहाँ आपकी किसीसे वाकफियत है?"

"जी हाँ!"

"किससे है?"

"आपसे!"

"तब आप मेरे घर चलेंगे?"

"जी, हाँ!"

बस! यह वार्तालाप उनके बीच हुआ और वे उसीके घर ठहर गये।

यह जो मनुष्य का मनुष्य पर एतबार है, वह क्या से क्या कर देता है! प्रेम बिजली है। प्रेम के उस बिजली से हर दिल भरा है। लेकिन एतबार नहीं है, इसलिए वह प्यार काम में नहीं आ रहा है। हमारे मनों में जो शक-शुबह है, वह हम छोड़ें और पूरा एतबार रखें तो प्यार दिल से बाहर आयेगा! इसीलिए सोचते-सोचते मैंने तय किया कि प्यार है बिजली और एतबार है बटन!

मैं अकेला हूँ पर सारी दुनिया मेरी है

अब यह यहाँके तहसीलदार साहब हैं। वे सरकारी अमलदार हैं। उनका काम सेवा करने का है। वे अगर खिदमत नहीं करेंगे, अवाम पर बेजा दबाव डालेंगे और धमकाकर जमीन माँगेंगे तो वे अपना फर्ज अदा नहीं करेंगे। फिर उनको प्यार भी कैसे हासिल होगा? अगर वे प्यार से, एतबार से लोगों से दान माँगेंगे तो उन्हें जरूर जमीन मिलेगी और अवाम का खूब प्यार भी हासिल होगा। लोग समझेंगे कि यह अपना खिदमतगार है। आखिर सरकार कहाँसे आयी है? क्या वह आसमान से टपकी है? उसे लोगों ने ही बनाया है। लोग मुझे जमीन देते हैं। क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि यह गैरजानिबदार शख्स है, अपना खिदमतगार है, सबका भला चाहता है। मेरा कोई इदारा नहीं है, न मेरी कोई काम करनेवालों की जमात है। यह कांग्रेस, नेशनल कान्फ्रेन्स, डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स आदि हैं, वह सब मेरी हैं और आप जो मेरे सामने बैठे हैं, वे भी सभी मेरे ही हैं। आपपर मेरा भरोसा है। आप इस काम को कीजिये। यह काम आपका है, मेरा नहीं है, मेरे घर का नहीं है। क्या मेरी लड़की की शादी है? यह आपका काम है। आप सबको इसे अपना काम समझकर उठा लेना चाहिए।

गरीबी और इन्सानियत

आज कुछ बहनें आयीं। सैलाब के कारण उनका काफी नुकसान हो गया, इससे वे रोती थीं। मैंने उनसे कहा कि अब मिल-जुलकर काम करो, इकट्ठा हो जाओ। इसपर वे कहने लगीं 'हम क्या इकट्ठा होंगे बाबा? हमारा सब कुछ चला गया। अब हमारी सुनता कौन है?' बहनों को इस तरह महसूस क्यों होता है कि हमारा कोई पूछनेवाला नहीं है! पड़ोसी को मदद करना, आफत में सहायता करना—क्या कोई कठिन काम है? हमारा समाज के प्रति कोई फर्ज है या नहीं? गरीबों का दुःख क्या हम इसी तरह देखते रहेंगे? क्या यही इन्सानियत है?

कुएँ में आप देखते हैं कि पानी की सतह एक होती है। बाल्टीभर पानी आप निकाल लें, तब भी क्या कुएँ के पानी में गढ़ा बनता है? कुएँ के पानी में कतरे-बूँदे एकदम दौड़ती हैं, गढा होने नहीं देतीं। इससे सतह हमवार बन जाती है। पूरी सतह नीचे उतर जाती है। दूसरी ओर चावल का ढेर हो और उसमें से मुट्ठीभर चावल निकाल लें तो वहाँ गढा बन जाता

www.vinoba.in

है। उस गढ़े को भरने के लिए चंद दाने दौड़ते हैं, लेकिन वह गढ़ा पूरा भरता नहीं है। इसलिए समाज होना चाहिए पानी जैसा! चावल के ढेर जैसा नहीं। समाज में एक सुखी और एक एक दुःखी, ऐसा नहीं होना चाहिए।

एक ही इलाज : बाँटो

घर में सबकी कमाई अलग-अलग होती है। लेकिन बाप १ रुपया कमाता है, इसलिए एक रुपये का खायेगा और बच्चा ४ आने कमाता है तो चार आनेका खायेगा, ऐसा नहीं होता। सब कमाई इकट्ठी होती है और फिर सभी बाँटकर खाते हैं। वैसे हमारा गाँव याने एक कुनबा है। आफत आयी तो आफत को बाँट लिया, सुख हुआ तो सुख बाँट लिया, ऐसा होना चाहिए। दौलत बढ़ गयी तो सुख बढ़ गया। सुख बँटता है तो बढ़ता है, दुःख बँटता है, तो घटता है। दोनों के लिए एक ही इलाज है, बाँटो। हम सब मिलकर प्यार से रहें, बाँटकर खायें।

मैं कश्मीर में आया हूँ तो प्यार के लिए आया हूँ। इसलिए आपसे कह रहा हूँ कि आप एक-दूसरे पर खूब प्यार करें। बटन दबाना सीखें। आप एक-दूसरे पर एतबार रखकर लोगों के पास जाइये, उनके कंधे पर प्यार से हाथ रखिये तो प्यार की कोई कमी नहीं रहेगी। [गतांक से समाप्त] ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

गढ़ी (जम्मू-कश्मीर) ४-९-'५९

कुएँ का पानी खेत में पहुँचने से पहले ही नाली में सूख रहा है

आज यहाँपर ग्राम-पंचायत के लोग मिलने आये। मैं उनसे कह रहा था कि आप लोगों को यह देखना चाहिए कि गाँव की ताकत किस तरह बढ़े, गाँव में प्रेम किस तरह बढ़े? सरकार की योजना बनती है और 'डेवलपमेंट' वाले लोग भी योजना बनाकर काम करते रहते हैं, लेकिन लोगों की ताकत नहीं बन रही है। ऊपर से बारिश होती है, लेकिन उतने से फसल नहीं बढ़ती। फसल के लिए तो लोगों को मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती है। अगर वे वैसा न करें तो फसल नहीं, घास उगेगी। गाँव के लोग जब तक अपना मनसूबा नहीं बनाते और प्यार से मिल-जुलकर रहना नहीं सीखते हैं, तब तक गाँव की तरक्की होनेवाली नहीं है।

पंचों से माँग

मैं पंचायतों के पंचों को कह रहा था कि आप लोग अपनी जमीन का छठा हिस्सा मुझे दें। मैं आपके घर का ही एक मेंबर हूँ। आपके घर में पाँच हैं तो मैं छठा हूँ। गरीबों का नुमाइंदा! इसलिए मुझे मेरा हक दो। छठा हिस्सा दो। इस तरह अगर गाँव के मुखिया करेंगे तो दूसरे भी करेंगे।

आप इतने लोग सभा में बैठे हैं, उन सबको इस विषय पर सोचना चाहिए। यह प्रेम की बात है। इसे समझने की जरूरत है। गाँव कैसे तरक्की करेगा? गाँववालों को वकील, साहूकार, व्यापारी, सरकारी नौकर, पुलिस आदि सभीसे मुकाबला करना पड़ता है। इसलिए सबको एक हो जाना चाहिए। गाँव की ताकत तभी बनेगी, जब गाँव में दिली एकता बनेगी। मुख्य बात सबका दिल एक हो जाने की है।

जब से जगे रे भाई तब से सबेरा

दिली एकता बनाने के लिए इस जमीन के मसले को बाहरी अलामत समझिये। यह कहने में खुशी होती है कि हमें आज तक कुल हिन्दुस्तान में छह लाख लोगों ने दान दिया है। कश्मीर में तो हमारी यह शुरुआत है। हम आठ साल के बाद अब यहाँ पहुँचे हैं। यहाँ बहुत देरी से काम शुरू हुआ है। लेकिन देर, सबेर, जब भी जागे, तभीसे सबेरा शुरू हुआ है, यह मानकर काम कीजिये। कश्मीर में अभी रात खत्म हुई, सबेरा हुआ और मुरगा बोल रहा है "जागो रे जागो।" अब लोग समझने लगे हैं कि अपने पास जो है, उसका एक टुकड़ा प्यार के तौर पर पड़ोसी को देना धर्म है। जमीन देना तो बाहरी चीज है, मुख्य चीज दिल एक बने, प्यार बढ़े–यही है। इस तहरीक से बेजमीनों को जमीन मिलेगी और फसल बढ़ेगी—ये तो बाहर चीजें हैं। लेकिन मूल चीज है, गाँव की रूहानी ताकत बढ़ेगी।

गाँव के लोग यह बात अच्छी तरह से समझते हैं। यह बात अलग है कि हमारी जबान यहाँके लोग कम समझते हैं। लेकिन उन्हें उनकी जबान में, प्यार से समझाना होगा। हमें पूरा भरोसा है, यकीन है कि गाँव का कुनबा बनाने की बात गाँववाले पकड़ लेंगे और उसपर अमल करेंगे। उनको प्यार से समझाने की देरी है। मैं समझानेवालों को ढूँढ़ रहा हूँ।

फौजियों की विशेषता

आज कुछ भाई सिपाहियों में से आये थे। (ऊधमपुर जम्मू और कश्मीर राज्य का फौज का मुख्य केन्द्र है। वहाँ-से फौजी भाई विनोबाजी के दर्शन के लिए दिनभर आते रहे।) उन्होंने हमपर बहुत प्यार बरसाया। आश्चर्य की बात है कि फौज में दाखिल हुए भाइयों के दिल में इतना प्यार भरा है, इतनी श्रद्धा भरी है! हमारे जवान (सोल्जर्स) अच्छे जवान हैं। उनके दिल में देश के लिए काम करने की और सेवा करने की लगन है। वे भक्त हैं। वे जाति-पाँति का भेद नहीं मानते हैं, यह बड़ी अच्छी बात है। आज डी० सी० साहब ने हमें बताया कि जब सैलाब के कारण बहुत नुकसान हो गया, तब फौजी भाइयों ने बहुत ही प्यार से पुल बाँधने का काम किया। कई जगह पुल टूटे, वहाँ इन्होंने नये पुल बनाये। ऐसी सेवा की ख्वाहिश, परमेश्वर की भक्ति, जाति-पाँति न मानने की प्रवृत्ति आदि अच्छे गुण फौजी भाइयों में हैं।

आज उनमें से बहुत से भाइयों ने 'गीता प्रवचन' खरीदा है। इतना प्यार, भक्ति और श्रद्धा जिन लोगों में हो, उनके हाथों से कुछ न कुछ अच्छा काम होना ही चाहिए। वे हमसे मिले तो उनको कितनी खुशी, कितना आनन्द हुआ! माँ और बच्चे बिछुड़ने के बहुत दिनों बाद फिर मिलें तो जितना आनन्द होता है, उतना ही आनन्द उनको हुआ।

प्यार खींचता है

उनका जो प्यार है, वह हमारे जिस्म के लिए नहीं, हमारे काम के लिए है। त्याग की, भक्ति की, कुर्बानी की बातें हिन्दुस्तान के दिल को ठंडक पहुँचाती हैं। कुर्बानी में तकलीफ होती है, फिर भी वह अच्छी लगती है। भक्ति, त्याग, दान—ये बातें किसके दिल को पसन्द नहीं आतीं? कभी-कभी हम मुख्तसर,

www.vinoba.in

थोड़ा बोलते हैं तो लोग कहते हैं कि हमारा पेट नहीं भरा। बाबा अगर खाओ, पीओ और मौज करो, ऐसी बात कहता तो लोग सुनने के लिए नहीं आते। इन बातों में जनता को कोई रस नहीं है। लेकिन बाबा प्यार की, देने की बातें करता है, इबादत की बात करता है और यही बात लोगों के दिल को खींचती है। अगर हमें ऐसी बातें सुनना पसन्द न हो तो हमारे कानों में और गधे के कानों में क्या फर्क रह गया? कबीर कहता है "श्रवण दिये सुन ज्ञान रे!" भगवान ने इन्सान को कान दिये हैं, वह ज्ञान सुनने के लिए, भगवान का नाम सुनने के लिए। ज्ञानी जो बात कहते हैं, उसे अमल में लाने की ताकत हममें होनी चाहिए। वैसी ताकत पैदा करनी होगी। नहीं तो ताकत टूट जायगी।

अगर आप घर में पाँच आदमी हैं और छठा नया पैदा होता तो आप क्या करते हैं? अपने मनुष्य का भार नहीं होता है। वैसे ही गरीबों का भी भार नहीं है। वे भी आपके घर के हैं। मैं गरीबों का प्रतिनिधि हूँ। मुझे आप अपने घर में स्थान दीजिये। बाबा आपके घर में पैठेगा तो आपको तकलीफ नहीं होगी। बरक्कत आयेगी। यह बात हम समझाते हैं तो लोग खुशी से समझते हैं।

दो-चार दिन पहले आस्ट्रेलिया के एक भाई हमसे मिलने आये थे। वे कह रहे थे कि हमारे यहाँ माली तरक्की बहुत हुई है। लेकिन रूहानियत घटी है। हम स्वार्थी बन रहे हैं। इसलिए आपके विचार की हमारे यहाँ सख्त जरूरत है। उन्होंने एक जबान बनायी है 'एसपेरॅन्टो'। वे चाहते हैं कि हमारे ये विचार इस जबान में आ जायँ तो दुनिया में ये विचार फैलेंगे। मैंने उनसे कहा कि मैं भी यह जबान सीखूँगा। मुझे सिखाने के लिए आप किसी आदमी को मेरे पास भेजिये। उन्होंने कबूल किया।

नान्यः पन्था विद्यते

मुझे कहना यह है कि इस विचार की दुनिया को आज भूख है। लेकिन यह विचार बाबा के घर की इस्टेट नहीं है। यही विचार पैगम्बर, नानक, ईसामसीह, तुलसीदास, कबीर, गौतम बुद्ध, रामचन्द्र आदि ने दुनिया को दिया है। इतनी ही बात है कि इन महापुरुषों ने जो बात बतायी है, उसपर चलने की कोशिश बाबा कर रहा है। चलने की राह नयी नहीं है। इसी राह पर बड़े-बड़े नबी, पैगम्बर, ऋषि, मुनि चले हैं। "बन्द खलासी भाजे होई"—जो इन्सान बँधा है, संसार में बँधा है, उसे मुक्ति कैसे मिलेगी? वह नजात कैसे पायेगा? "न अन्यः पंथा विद्यते।" भागवतकार ने कहा है, यह एक ही राह है, एक ही रास्ता है, वह है प्यार का। बाबा उसी रास्ते पर चलने की कोशिश करता है और आपको बुलाता है, दावत देता है। "आओ रे आओ! जागो रे जागो।"

पश्चिम भी भूखा है

अब दुनियाभर के लोग आते हैं और देखते हैं कि बाबा कैसे प्यार से माँगता है और लोग कैसे प्यार से देते हैं? यहाँ गुर्बत है, लेकिन अमेरिका में गुर्बत नहीं है, यूरोप में भी नहीं है। वहाँ खुशहाल लोग हैं। यह बात अलग है कि वहाँ भी कम-ज्यादा है। पर जो है, काफी है। लेकिन क्या वहाँ समाधान है? क्या तसल्ली है? नहीं। गुर्बत भी नहीं है, तसल्ली भी नहीं है। क्या सिर्फ पैसे से, मौज-मजा करने से ही तसल्ली होती है? आराम मिले तो बैल भी खुश होता है। लेकिन उतने से इन्सान को खुशी नहीं होती। उसके दिल को रूहानियत से तसल्ली मिलती है। यह इन्सान की खुसूसियत है कि सिर्फ माली हालत से उसकी तसल्ली हरगिज नहीं होती। इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया वगैरह में यही स्थिति है। इसीलिए वे आस्ट्रेलिया के भाई कह रहे थे कि "इस वक्त आपके विचार की उधर सख्त जरूरत है।" मैं कहता हूँ, क्या यह मेरे बाप की इस्टेट है? मेरे विचार याने क्या? बाइबल में भी तो ये ही विचार हैं। तब फिर ये मेरे विचार हैं, ऐसा क्यों लगता है? इसलिए कि हिन्दुस्तान के लोग थोड़ा अमल कर रहे हैं और अमल की राह बाबा दिखा रहा है। "पड़ोसी पर वैसा ही प्यार करो, जैसा अपने पर करते हो।" यह बाइबल में चर्च में जाकर पढ़ते हैं। पढ़ने में कमी नहीं है। हिन्दुस्तान में थोड़ा अमल होता है, इसलिए ताज्जुब होता है। पश्चिम के लोगों को रूहानियत की भूख है। वे लोग शौक में, पैसे के सुख में पड़े हैं, लेकिन उन्हें तसल्ली नहीं है।

गुर्बत और मेहमानवाजी

कश्मीर में हमने हद दर्जे की गुर्बत देखी, लेकिन फिर भी यहाँ मेहमानवाजी है। आज हमारा मेहमान हमारे घर में आया है तो हम कल की नहीं देखेंगे। कल से बिलकुल बेपर्वाह होकर खातिरदारी करते हैं। 'नानक बिगसै बेपर्वाह।' हमें चंद दिन इस दुनिया में रहना है। आज गुर्बत है, इस वजह से हम मेहमान को कम खिलायें या नहीं ही खिलायें, यह यहाँ नहीं हो सकता। यहाँका हर इन्सान सोचता है कि आये हुए मेहमान की खातिरदारी हमें जरूर करनी चाहिए। अगर मैं आज ही मर गया तो अल्लाह के पास जाकर क्या जवाब दूँगा? मतलब यह कि मैं मेहमानवाजी न करूँ तो धर्म का मौका खोऊँगा। ऐसी भावना है यहाँ।

पश्चिम के कुछ लोग हमें सुनाते हैं कि हिंदुस्तान में हद दर्जे की गुर्बत है, फिर भी यहाँके चेहरों में रोनी सूरत नहीं है। वे हँसते रहते हैं। मैंने कहा, यह तो हिंदुस्तान की मस्ती है। यह मस्ती भक्ति के बिना नहीं आती है। जो भक्ति होनी चाहिए, वह यहाँ है। भक्ति हो तो सुख में मस्ती का अनुभव आता है और दुःख में भी। यह मस्ती इन लोगों में है, इसीलिए यहाँके लोग जिंदा हैं, नहीं तो रोते-रोते वे मायूस हो जाते, मर जाते।

हिंदुस्तान में यह जो मस्ती है और दिल की उदारता है, वह इसलिए है कि यहाँके लोग यह समझते हैं कि इस दुनिया में हमें कायम नहीं रहना है। यह दुनिया फानी है, फना होनेवाली है। रहनेवाली नहीं है। नष्ट होनेवाली है। इसलिए थोड़े समय में हमें धर्म, इबादत, भलाई, प्यार के काम वगैरह करना चाहिए। यह तमन्ना यहाँके लोगों के दिल में होती है। इसीलिए वे इसे अमल में लाने की कोशिश करते हैं और मस्त रहते हैं।

आज कुछ पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि हिंदुस्तान के लोग कल की फिक्र नहीं करते हैं। मैं कहता हूँ, मेरे भाइयो, वे लोग अगर ऐसा समझेंगे कि हमें इस दुनिया में रहना है तो वे रोने लगेंगे। इसलिए वे बेफिक्र रहते हैं और समझते हैं कि यहाँ चंद दिन रहना है तो आज की बात आज कर लें और कल की बात कल।

अभी दौलत बढ़ाने की बात चलती है। क्या दौलत बढ़ रही है? पंच सालाना मनसूबा हो रहा है। पहला, दूसरा हुआ, अब तीसरा होने जा रहा है। लेकिन लोगों की हालत क्या है? इतना पैसा खर्च हो रहा है, लेकिन नीचे नहीं पहुँच रहा है। बीच में ही खत्म हो रहा है। हमें खेती का अनुभव है। हमारा कुँआ

www.vinoba.in

थोड़ा ऊपर था, खेत नीचे। खेत में पानी पहुँचाने के लिए बीच में एक नाली बनायी गयी। सारा पानी वही नाली खा जाती थी। वैसी हालत आज हमारी है। जो सबसे गरीब हैं, उनको मदद नहीं पहुँचती है। फिर भी लोगों के पास गुर्बत में भी मस्ती है और बहादुरी है। वे दीन नहीं बनते, कमजोर नहीं दीखते, इसके मूल में उनकी रूहानियत की भूख है, सेवा, त्याग, भक्ति की लगन है और संतों का प्यार है।

गंदगी और कश्मीर

मैंने कश्मीर के बारे में बहुत सुना था। लेकिन जो सुना था, उससे एकदम विपरीत देखने को मिला। झूठ और सच में कितना फासला है? ऐसा कोई पूछे तो मैं कहूँगा, जितना फासला आँख और कान में है। मैं कश्मीर-वैली में घूमकर आया और मैंने देखा वहाँके हिंदू, मुसलमान आदि सब प्यार करना जानते हैं और चाहते हैं। चंद बुरे लोग दुनिया में सब जगह होते हैं और जिंदगी का जायका बढ़ाने के लिए ही होते हैं। वैसे कश्मीर में भी हैं। लेकिन मैंने देखा, कश्मीर की हवा में ठंडक है, वैसे ही दिमाग में भी ठंडक है। यह देखने से ही पता चला, सुनने से नहीं।

मैंने यहाँके स्वभाव के गुण बताये, वैसे ही यहाँ दोष भी हैं। वे दोष निकालने चाहिए। यहाँ गन्दगी बहुत है। गन्दगी निकाल सकते हैं।

एक था भाई! उसके पास बिलकुल कपड़े नहीं थे। वह घोड़े के सहारे जिंदगी जीता था। उसके बारे में लोग शिकायत करते थे कि वह अपनी बीबी, बच्चे की भी पर्वाह नहीं करता है। मैंने उससे पूछा तो वह बोला "क्या करूँ? जो मुझे मिलता है, वह पहले मैं घोड़े को देता हूँ। पीछे घरवालों को देता हूँ और पीछे मैं खाता हूँ।" याने उसे क्या मिलता था? चने। और कुछ मिलता नहीं था। ऐसी हिन्दुस्तान के लोगों की हालत है! मैं घोड़े वाले जैसे को तो कैसे कहूँ कि तुम गन्दगी में मत रहो!

मैं पीर-पंजाल लाँघकर कश्मीर-वैली में गया, तब दो भाइयों के हाथ पकड़कर चलता था। उसमें एक भाई ब्लाक के अफसर थे और दूसरा भाई था पहाड़ी! पहाड़ी भाई का मुझे ज्यादा सहारा था। वह तीन-चार दिन रहा। उसने अपने कपड़े चारछह महीने से धोये नहीं होंगे। इसलिए वह जितने दिन रहा, उसके कपड़े की बदबू आती रही। मैं कुछ बोला नहीं। क्योंकि उसके प्यार की बदबू तो नहीं आती थी।

सबका योग मिले

खुशी की बात है कि यहाँ कुछ लोगों ने दान दिया है। सभी थोड़ा-थोड़ा दें, तभी यज्ञ होता है। पुराने जमाने की बात है। वृन्दावन में इन्द्र ने खूब बारिश बरसायी। सात दिन लगातार बारिश बरसती रही। गाँव बहने लगा। गाँव के लोग भगवान कृष्ण के पास गये। बोले, अब क्या करें? भगवान कृष्ण ने कहा, हम गोवर्धन पहाड़ उठायेंगे और उसका छाता बनायेंगे। लोगों ने पूछा, कौन उठायेगा? उन्होंने कहा, सबको उठाना होगा। सबके हाथ लगने चाहिए। उनकी आज्ञा के मुताबिक भाई, बच्चे, बहनें, बूढ़े आदि सभी लोगों ने अपने-अपने हाथ लगाये। जब भगवान कृष्ण ने देखा कि कुल लोगों के हाथ लगे हैं, तब उन्होंने धीरे से अपनी अँगुली लगायी। पहाड़ उठ गया। लोगों ने भगवान से पूछा, आपकी अँगुली में इतनी ताकत है तो पहले ही अँगुली क्यों नहीं लगायी? तब भगवान कहते हैं "बच्चो, तुम्हारी ताकत भी कम नहीं है।" भगवान आफत से छुड़ाता है, मदद करता है, पर कब? जब सब मिलकर काम करते हैं।

यज्ञ कब होता है? जब सब उसमें आहुति देते हैं। इसलिए भूदान-यज्ञ में हर किसीको देना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं, क्या भूदान से मसला हल होगा? हम कहते हैं, मसला तब हल होगा, जब भगवान की अँगुली लगेगी! भगवान की अँगुली कब लगेगी? जब आपमें से हर कोई दान देगा। ♦♦♦

प्रार्थना-प्रवचन

चंपियाड़ी (जम्मू-कश्मीर) ३१-८-'५९

पूरा गाँव एक होकर कोशिश करे तो गरीबी खत्म हो जायगी

[चंपियाड़ी में भारत सरकार की तरफ से पाकिस्तान से छुड़ाकर लायी हुई लड़कियों की एक संस्था है, जहाँ विनोबाजी का निवास था।]

ये बहनें!

आज यहाँपर हमने लड़कियों से बहुत बातें कीं। हमें उम्मीद है कि वे जिन्दगी में इसे कभी नहीं भूलेंगी और इसपर अमल करने की कोशिश करेंगी। इन लड़कियों में से ज्यादातर ऐसी हैं, जिनके भाई, बाप या चाचा मारे गये। इन बहनों में से कई बहनें ऐसी हैं, जिनके पति मारे गये। वे सब बेकसूर, बेगुनाह मारे गये। किसीका कोई कसूर नहीं था, लेकिन १२ साल पहले जब यहाँ कबाइलियों का हमला हुआ, तब मीरपुर, मुजफ्फराबाद, पूँच, बारामुल्ला के इलाके में वे सारे लोग मारे गये थे। अब ये लड़कियाँ यहाँ रखी गयी हैं, इन्हें तालीम दी जा रही है स्टेट की तरफ से। इन्हें मदद दी जा रही है और काम करनेवाली काबिल बहनें इनकी खिदमत में हैं। एक बहन ने हमें उसके हाथ पर जो गोली के निशान थे, वे दिखाये। जब हम हमलावर के उस हमले को याद करते हैं तो हमें लगता है कि किसीकी किसीके साथ कोई अदावट नहीं थी। जो सियासत के पीछे पागल होते हैं, वे ही लोगों को बहकाते हैं और फिर लोगों में लड़ाई-झगड़े होते हैं।

सियासी नेताओं से बचो

पिछली लड़ाई में दो करोड़ लोग मारे गये थे। देहात के लोग दो करोड़ का आँकड़ा क्या समझेंगे। आपके कश्मीर की आबादी ४० लाख है तो यही समझो कि ऐसे पाँच कश्मीर बर्बाद हो गये। यूरोप के मुल्कों के हर परिवार में कोई न कोई मरा है या जख्मी हुआ है। जैसे पतंग लड़ानेवाले होते हैं, वैसे ही सियासत लड़ानेवाले लड़ाकू लोग भी होते हैं। वे लीडर, नेता कहलाते हैं और लोगों को बहकाते रहते हैं। जब तक लोग जाहिल रहेंगे और नेताओं के बहकावे में आयेंगे, तब तक दुनिया की यही हालत रहेगी। इसीलिए मैं हमेशा लोगों से कहता रहता हूँ कि तुम पार्टी पॉलिटिक्स से अलग रहो। दुनिया में इससे बद-

www.vinoba.in

तर कोई चीज नहीं है। ये सियासतदाँ हमेशा लड़ानेवाले, नफरत पैदा करनेवाले, फसाद फैलानेवाले होते हैं। ये एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह की निगाह से देखते हैं, कहीं किसी पर एतबार नहीं रखते हैं। तोबा ! तोबा !! दुनिया बेजार है इन लीडरों से ! हमने आज ही पेपर में पढ़ा कि चीन और हिंदुस्तान के बीच कशमकश शुरू हुई है। दोनों देशों के नेता इकट्ठा बैठकर बात करके मसले हल कर सकते हैं, लेकिन वे बैठते नहीं हैं।

अयूबखाँ की घोषणा

आज हमने पेपर में एक खुश-खबरी पढ़ी कि अयूबखाँ ने कश्मीर के मुतल्लिक कहा है कि 'हम हिंदुस्तान पर कभी हमला करनेवाले नहीं हैं। हमें अगर हमला ही करना होता तो पहले ही करते।' मैं जानता ही था कि वे हमला करनेवाले नहीं हैं, हमला करना उनके लिए नामुमकिन है। एक खेत का किसान पड़ोसी के खेत पर कब्जा कर ले, यह अलग बात है, लेकिन हिंदुस्तान और पाकिस्तान जैसे बड़े देश एक-दूसरे पर हमला करें, यह तब बनेगा, जब अमेरिका पीछे रहेगी और कहेगी कि हमला करो। लेकिन इस समय अमेरिका यह नहीं कहनेवाली है, क्योंकि इससे वर्ल्ड वार होगा। अयूब खाँ ने लफ्जों में ऐसा जताया, इससे मुझे खुशी हुई। इसी तरह हम एक-दूसरे पर एतबार करना सीखेंगे तो नजदीक आयेंगे।

आप हममें, हम आपमें

अमेरिका, रूस, हिंदुस्तान, पाकिस्तान आदि सभी देश के लोग अपने बाल-बच्चों में रहते हैं। वे प्यार करना नहीं जानते सो नहीं, परन्तु उन्होंने प्यार को कैदी बनाकर रखा है। घर में प्यार और बाहर दुश्मनी, शक-सुबह, अदावद। प्यार को महदूद करने का नतीजा यह हुआ है कि प्यार की ताकत ही नहीं रह गयी है। इस समय प्यार फायदेमंद न रहकर नुकसानदेह चीज साबित हो रही है। पानी का बहना रुक जाय तो पानी गन्दा हो जाता है। उसी तरह प्यार बहता रहे तो उसमें मजा आता है, जिंदगी रहती है। यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है, बेटा है और इनके सिवाय बाकी सब मेरे नहीं हैं, यह अगर इसी तरह चलता रहा तो इन्सान के दिल के टुकड़े हो जायँगे। हमें समझना चाहिए कि जिसे इन्सान का दिल कहते हैं, वह सभी जिस्मों में है। हम सिर्फ हमारे ही जिस्म में नहीं रहते हैं, आपके भी जिस्म में रहते हैं और आप भी सिर्फ आपके ही जिस्म में नहीं रहते, हमारे जिस्म में भी रहते हैं। जिस तरह से आसमान आलीशान मकान, झोपड़ी और सभी जगहों में फैला हुआ है, वैसे ही अपनी रूह सिर्फ एक ही जिस्म में नहीं, बल्कि सभी जिस्मों में है। इसलिए मेरा-तेरा छोड़ दीजिये। मैं मुझमें हूँ और आपमें भी हूँ। आप आप में भी हैं और मुझमें भी हैं। इस तरह हम महसूस करेंगे तो हमें मालूम होगा कि यह जो सारा खेल चल रहा है, वह हममें ही चल रहा है। दुनिया में हम ही हम हैं। सारे हमारे ही मुख्तलिफ रूप हैं, हम ही हमारे सामने खड़े हैं। कुछ आइने छोटी या बड़ी परछाई बताते हैं, लेकिन हमारे चारों ओर न भी हों तो हम सब जगह अपनी ही परछाई देखते हैं। वैसे ही हम महसूस करें। हमें जो भी दीखते हैं, वे सब हमारे ही रूप हैं। हम आपके हैं और आप हमारे हैं। इसीको रूहानियत कहते हैं। जब इन्सान को रूहानियत का खयाल आता है, तब उसकी जिन्दगी में आनन्द ही आनन्द, मजा ही मजा होता है। लोग बयान करते हैं कि बाबा को कितनी तकलीफ उठानी पड़ रही है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे तकलीफ कतई नहीं हो रही है और न मुझे दुःख का एहसास ही हो रहा है। मेरी जिंदगी में आनंद ही आनंद है। इसलिए कि मैं यह समझता हूँ कि मैं अकेले इस जिस्म में नहीं हूँ, दूसरे सभी जिस्मों में भी मैं ही हूँ।

सब कुछ सबका है

भगवान ने मुझे जो ताकत, कूवत, अक्ल दी है, वह मेरे पास है, लेकिन मेरी अकेले की नहीं है, सबकी है और सबके लिए है। मेरे इस चिन्तन का नतीजा यह होता है कि मैं छोटा-सा जीव हूँ, लेकिन सब लोग मेरी फिक्र करते हैं। आपकी सरकार मेरी फिक्र करती है, आपके नेता, सब पार्टी के लोग मेरी फिक्र करते हैं। सबका अमित प्यार देखकर मैं सोचने लग जाता हूँ कि मैंने दिया कितना और पाया कितना ! मैं तो बनिया बन गया, दो पैसे दिये और भर-भर के पाया। मेरे पास जो कुछ था, वह मैंने दे दिया, लेकिन मेरे पास था ही थोड़ा, जिसे देकर मैंने भर-भर के पाया। आप भी ऐसा ही कर सकते हैं। यह कोई विनोबा की खास, रजिस्टर्ड चीज नहीं है। हर कोई चाहे तो राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री या गामा पहलवान नहीं बन सकता है, लेकिन बाबा तो बन ही सकता है। बाबा की जो हालत है, वह आपकी हो सकती है। इसमें कोई तकलीफ नहीं है। उल्टे तकलीफ खोने की ही बात है। अगर आपको तकलीफ खोने में ही डर मालूम होता हो तो दूसरी बात है। मैं अगर चाहूँ तो भी गामा पहलवान नहीं बन सकता हूँ। उसी तरह यह नामुमकिन है कि हर कोई प्रधान मन्त्री बने, क्योंकि उसके लिए भी तरह-तरह की काबिलियत, तरबियत और मौके चाहिए। लेकिन हर कोई चाहे कि मैं सबपर प्यार करूँ, भगवान ने मुझे जो दिया है, वह सबको दे डालूँ तो कुदरत की तरफ से कोई रुकावट नहीं होगी।

यही वजह है कि लोग मेरी बात सुनने के लिए आते हैं। वे समझते हैं कि बाबा जो कहता है, वह आसान है, उसमें कोई बोझ नहीं है, अगर इतना भी हमसे न बने तो हम कम्बख्त हैं। बाबा जो बता रहा है, वह कोई गैरमामूली बात नहीं है। यह ऐसी बात है, जो 'इन्किलाबे-कल' (हृदय-परिवर्तन) लानेवाली है, सिर्फ बाहरी इन्किलाब नहीं, दिल को तबदील करनेवाला इन्किलाब लानेवाली है।

व्यापारियों से

आज कुछ ताजीर (व्यापारी) हमसे मिलने आये थे, उन्होंने कुछ पैसा दान दिया है। मैंने कहा कि प्यार की अलामत के तौर पर यह ठीक है। लेकिन मैं तो चाहता हूँ कि आपके घर में पाँच आदमी हैं तो बाबा छठा है, यूँ समझकर अपनी कमाई का एक हिस्सा सम्पत्ति-दान के तौर पर हमेशा देते रहिये। आपकी दूकान, तिजारत वगैरह की मुझे कोई पर्वाह नहीं है। आपके पास लाख रुपये की इस्टेट हो या पचास रुपये की ही, आप अपने घर में जो खर्च करते हैं, उसका छठा हिस्सा बाबा का है, यह कबूल कीजिये। उन्होंने यह बात समझ ली। यह ठीक है कि एकदम उसपर अमल करने की हिम्मत नहीं होगी। भगवान उनमें हिम्मत भर देगा, तभी यह होगा।

सब कुछ भगवान का है

बाबा के शब्दों में कोई जादू नहीं है। बाबा अपना सब कुछ छोड़ बैठा है, इसलिए भगवान उससे काम कराता है। नहीं तो

www.vinoba.in

क्या मजाल थी कि वह पीर-पंजाल लाँघे और वापस जिन्दा लौट आये। आँधी, सैलाब का मुकाबला करना बाबा के वश की बात नहीं थी। लेकिन परमात्मा को यह करना था, इसलिए हुआ। हमने जाहिर किया था कि हम पीर-पंजाल लाँघ नहीं सके तो कश्मीर न जाकर वापस पंजाब लौट जायँगे। भगवान ने हमारी बात सुनकर सोचा कि यह वापस लौटा तो मेरी फजीहत होगी, उसकी नहीं। दो दिन आसमान साफ रहा और हम पीर लाँघ सके। लोग ताज्जुब में रह गये। मैंने कहा कि यह होने ही वाली चीज थी। अगर यह नहीं होता और भगवान मुझे वहाँसे उठा लेता तो भी मैं खुश होता और उससे कहता कि मैं तो बेफिक्र हूँ। मैं थका हुआ था, इसलिए तेरे पास आने को राजी हूँ। अगर वह मुझे उसका काम करने कश्मीर भेजता तो भी मैं राजी था। इस तरह मैं दोनों तरफ से राजी था। यह उसका काम है। उन ताजीरों में से कितने लोगों को यह काम करने की हिम्मत होगी? जिनको भगवान हिम्मत देगा, वे करेंगे।

कोई दे या न दे

मुझे आज तक छह लाख लोगों से ४५ लाख एकड़ जमीन मिली है। यह एक बड़ी बात है, ऐसा कहा जाता है। लेकिन बाबा हिसाब जानता है। हिन्दुस्तान के सात करोड़ कुनबे में से तीन करोड़ कुनबों के पास कम-बेसी ही सही, पर जमीन है। उनमें से सिर्फ छह लाख ने दान दिया है याने कितने लोगों ने नहीं दिया, यह बाबा जानता है। इसपर भी वह मायूस नहीं होता है। वह समझता है कि किसीने दान दिया तो भगवान ने और किसीने नहीं दिया तो भगवान ने नहीं दिलाया। इसलिए मैं तो अपनी ही बादशाही में मस्त हूँ। मैं रात को सोता हूँ तो सोने में मुझे दो मिनट की देरी नहीं लगती है। क्योंकि मुझे कोई फिक्र नहीं है। मैं बेफिक्र हूँ। अपनी मस्ती में, आनन्द में रहता हूँ। इसलिए किसीको लगता है कि बाबा तपश्चर्या कर रहा है तो मैं कहना चाहता हूँ कि बाबा कुछ भी तपश्चर्या, इबादत नहीं करता है। तपश्चर्या तो उन लोगों की होती है, जो बाल-बच्चों के लिए रात-दिन जागते हैं, एक लड़की की शादी करने से ही जिनकी जिंदगीभर बर्बादी होती है, साहूकार पीछे लगते हैं। बाबा इन सबसे बरी है। बाबा को कुछ भी नहीं करना पड़ता है। तपश्चर्या तो ये बाल-बच्चेवाले करते हैं। इनका तप देखकर दुःख होता है कि ये इतना तप करते हैं, लेकिन पाते हैं कम। बाबा काम कम करता है और पाता है ज्यादा। यह कीमिया बाबा को सधी है, उसे यह कुंजी हासिल है। सुख की कुंजी यह है कि जो अपना सुख नहीं चाहता है, दूसरों का सुख चाहता है, उसे सुख हासिल होता है। जो अपना ही सुख चाहता है, उसको कतई सुख हासिल नहीं होगा।

एकता ही ताकत है

आप छोटे-छोटे गाँवों में रहोगे और 'मेरा मेरा' करोगे तो कैसे टिकोगे? आप अलग-अलग रहोगे तो साहुकार, व्यापारी, वकील, सरकारी अफसर—सब आपको तकलीफ देंगे और आप इनका मुकाबला नहीं कर सकोगे। मिल-जुलकर रहोगे, एक बनोगे तो आपकी ताकत बनेगी। अलग-अलग धागे टूट जाते हैं, लेकिन धागे इकट्ठा करके बँट दिये जायँ तो एक मजबूत रस्सी बनती है, जिससे हाथी भी बाँधे जाते हैं। लोग समझते हैं कि मजबूत होने के लिए देहली या श्रीनगर से ताकत मँगवानी पड़ती है। लेकिन वहाँपर कोई ताकत का भण्डार नहीं है। ताकत तो गाँव में ही पड़ी है। आप एक हो जायँगे, प्रेम से रहेंगे तो ताकत बनेगी। लोग इस बात को समझते हैं कि बाबा जो कहता है, वह आसान और सब तरह से फायदेमन्द बात है। अगर हम यह नहीं करते हैं तो किसीको किसीका यकीन नहीं रहेगा, लोग एक-दूसरे की तरफ शक और शुबह की निगाह से देखेंगे। फिर जातियाँ, कौम, मुल्क एक-दूसरे के खिलाफ होंगे, दुनिया की हालत बदतर होती जायगी और एटम, हैड्रोजन बम से दुनिया का खात्मा होने की नौबत आयेगी। इस तरह एक बाजू ढेर फायदा है और दूसरी बाजू ढेर खतरा है। इतना होते हुए भी इन्सान इस विचार को कबूल नहीं करेगा तो वह परमेश्वर की माया ही होगी। इसलिए हम बिलकुल बेफिक्र घूमते हैं। हम समझते हैं कि लोग हमारी बात जरूर सुनेंगे, क्योंकि परमेश्वर इसे चाहता है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

कुद (कश्मीर) ३०-८-'५९

दुनिया में सियासत से नहीं, प्यार से ही अमन कायम होगा

आज सुबह हम साढ़े चार बजे यात्रा के लिए निकले, तब बारिश हो रही थी। रास्तेभर बारिश थी। परमेश्वर की कृपा से हमारी यात्रा बारिश में रुकती नहीं है। वह चाहता है कि जैसे सूरज रोज उगता है, वैसे यात्रा भी रोज चले। इसलिए वही यात्रा में बल देता है और रक्षण भी करता है। आगे बढ़ने की ताकत देना, यह उसकी करनी है। अभी आप बड़े इत्मीनान से बैठे हैं। बारिश रुक गयी है। यह भी उसकी करनी है।

हमारा काम केवल जमीन बाँटना नहीं

यह स्थान खूबसूरत है। चारों ओर पहाड़ है। आसमान खुला है। पहाड़ियाँ दीख रही हैं। ऐसी अच्छी जगह में आज हम सब बैठे हैं। आज यहाँ बैठे हैं, कल यहाँसे चले जायँगे। हम यहाँ हवा खाने के लिए तो नहीं आये हैं, जमीन पाने के लिए आये हैं और जमीन पाने के लिए ही घूम रहे हैं।

हमें यह कहने में खुशी होती है कि बावजूद सीलिंग के यहाँ जमीन दी जा रही है। लोग देने के लिए तैयार बैठे हैं, यह खुशी की बात है। हमारे भाई (डी. सी.) साहब ने, जो इस जिले के जिम्मेवार हैं, कहा है और वादा किया है कि हम सब लोगों के पास पहुँचने की और उनके दिल में पैठने की कोशिश करेंगे। जमीन हासिल करेंगे और गरीबों में बाँटेंगे।

मैं कहना चाहता हूँ कि हमारा काम सिर्फ जमीन बाँटने का नहीं है, दिलजमाई का काम है। गाँव-गाँव में अमीर और गरीब दोनों का दिल एक हो और कुल गाँव की ताकत गाँव की खिदमत में लगे, यही हम चाहते हैं। जमीन पाने का तो एक बहाना है। इस समय जमीन का अहम मसला है। उसे हाथ में लेकर हम उसीके जरिये गाँव की ताकत इकट्ठी कर रहे हैं।

सियासत की बुराई लोग समझने लगे हैं

आज हमारे भाई साहब ने कहा कि आपकी कश्मीर-यात्रा

www.vinoba.in

का परिणाम यहाँके सियासी माहौल पर भी अच्छा हुआ है। हमें भी यह लगा कि सियासी पार्टीवालों के खयाल में यह बात आयी है कि अब क्या करना है? अब आनेवाले जमाने में सियासत से मसले हल नहीं होंगे, रूहानियत से हल होंगे। अगर हम सियासत से ही मसले हल करने जायँगे तो कशमकश जारी रहेगी। इस बात का एहसास सियासतदाँ को हुआ है, ऐसा हम पर असर हुआ है और यहाँकी जनता समझ गयी है कि कश्मीर के मसले ऐसी सियासत से हल नहीं होंगे।

आज दुनिया में सब दूर डर छाया हुआ है। लोग सियासत से तंग आ गये हैं। बड़े-बड़े लोग, जिन्होंने अपनी जिंदगी सियासत में बितायी, वे भी अब नये रास्ते की तलाश में हैं। हम सुन रहे हैं कि अमेरिका और रूस के बड़े-बड़े लीडर, क्रुश्चेव और आइक मिलने जा रहे हैं। अब दुनिया में अमन, शांति होगी, ऐसी आशा पैदा हो रही है। लेकिन दुनिया का अमन सिर्फ इन दो लोगों पर ही निर्भर रहे—यह खतरनाक बात है। वे लोग दुनिया की शांति में मदद करें, लेकिन हम चाहते यह हैं कि गाँव-गाँव में लोग प्यार से, अमन से रहें।

दुनिया की शान्ति हमपर निर्भर है

आज गाँव-गाँव में टुकड़े हो गये हैं। मुख्तलिफ फिरके, जाति, मजहब अलग-अलग मिलकियत और मालिक, मजदूर के भेद जब तक कायम रहेंगे, तब तक गाँव-गाँव में शांति नहीं होगी। इसलिए देश में शांति नहीं होगी। देश में शांति नहीं होगी तो गाँव में शांति नहीं होगी, दुनिया में शांति नहीं होगी। इसलिए दुनिया की शांति निर्भर है हमपर! हम कैसे रहते हैं, गाँव-गाँव में शांति से रहते हैं या नहीं, प्यार से रहते हैं या नहीं, यही मुख्य सवाल है!

तुम मुझे दो, मैं तुम्हें दूँगा

हमें यह देखकर खुशी होती है कि ऐसी बारिश में भी लोग दूर-दूर जंगल से, पहाड़ों पर से, कष्ट उठाकर आते हैं और जमीन देकर चले जाते हैं। लोगों को इस बात का ताज्जुब होता है, पर मुझे नहीं होता। खुशी सबको होती है और मुझे भी होती है, पर मुझे ताज्जुब नहीं होता है। क्योंकि यह बात इसलिए बन रही है कि यह जमाने का तकाजा है और भगवान यह चाहता है। दुनिया में वही होता है, जो भगवान चाहता है। और जो भगवान चाहता है, वह जमाने की माँग हो जाती है।

बाबा कहता है कि जमीन की मिलकियत नहीं होनी चाहिए। बच्चे, बहनें, बूढ़े, सभी कहते हैं—जमीन की मिलकियत मिटनी चाहिए। लेकिन देने में हिचकिचाहट होती है। अगर दिल ने तसलीम किया, कश किया और लोग सबका सब देने लगे तो मैं उनमें से थोड़ा दान उन्हींको वापस दूँगा। आज दो बहनें अपनी सब जमीन दान देने आयी थीं, लेकिन उनकी चिन्ता भी तो मुझे ही करनी पड़ेगी, इसलिए मैंने उनके साथ कुछ फैसला किया कि उनको उसमें से थोड़ी जमीन वापस की जायगी।

मैं लोगों से जमीन का छठा हिस्सा माँगता हूँ और कहता हूँ कि आखिर जमीन की मिलकियत रखना ही गलत है। जमीन लोगों में तकसीम कर दीजिये, बाँट लीजिये। चाहें तो अलग-अलग काश्त कीजिये, नहीं तो सब मिलकर कीजिये। दस-बारह साल के बाद फिर से जमीन का बँटवारा कीजिये। इस तरह से कुल गाँव अपने लिए सोचे, जैसे एक कुनबा सोचता है। मैं चाहता हूँ कि इस तरह से गाँव-गाँव अपने को बना लें तो दिल्ली का भार कम हो, श्रीनगर की जिम्मेवारी भी कम हो। ताकि देश में शान्ति हो जाय।

प्यार की भाषा सीखें

यह शान्ति का विचार इसकी बुनियाद में है। इसी कारण देश-विदेश के लोग यहाँ आते हैं। कल ही एक आस्ट्रेलिया के भाई आये थे। वे प्यार से बात कर रहे थे। कहते थे "एसपेरॅन्टो" भाषा सीखनी चाहिए। 'एसपेरॅन्टो' यह कोई किसीकी मादरी जबान नहीं है यह एक भाषा बनायी है और वे चाहते हैं कि दुनिया-भर में यही एक कॉमन भाषा चले। इसलिए सब सीखें। वे बोले कि इसे दो महीनों में सिखा सकते हैं। हमने कहा कि हमारे लिए 'एसपेरॅन्टो'—'हिन्दी' है। लेकिन प्यार के खातिर मैं 'एसपेरॅन्टो' सीखने के लिए तैयार हूँ। कोई मुझे सिखाने के लिए मेरे साथ यात्रा में रहे तो मैं रोज एक घंटा जरूर दूँगा। मैं दूसरी-तीसरी बहुत-सी भाषाएँ प्यार के लिए सीखा हूँ। यह भी प्यार के लिए सीखूँगा। लेकिन आपसे यह नहीं कहूँगा कि आप 'एसपेरॅन्टो' सीखें। आपको उसकी जरूरत नहीं है। दुनिया से बात करने के लिए मैं आपसे कहूँगा कि आप 'भूदान की जबान' सीखें। प्यार से रहें, मिलकियत मिटा दें। एक होकर रहें। यह प्यार सारी दुनिया में फैलेगा।

हिंदी, इंग्लिश, जापानी आदि सारी उन-उन लोगों की मादरी जबानें हैं। लेकिन फिर भी ये जबानें छोटी हैं। सबसे बड़ी है—'प्यार की जबान'। घोड़ा, गधा, बैल आदि जानवर भी प्यार की जबान समझते हैं। 'एसपेरॅन्टो' और अंग्रेजी नहीं समझते हैं।

मेरा एक साथी था। वह मेरे पास आकर कहने लगा कि मैं घोड़े पर बैठना चाहता हूँ, लेकिन वह मुझे बैठने नहीं देता। मैंने पूछा 'घोड़े की सेवा कौन करता है?' बोला 'नौकर।' मैंने कहा 'नौकर उसकी खिदमत करे और तुम उसपर सवार होओ, यह कभी नहीं हो सकता। तुमको खिदमत करनी चाहिए।' उसने जाकर घोड़े की खिदमत शुरू की तो घोड़ा भी उसकी सवारी के काम आने लगा। मैं कहना यह चाहता हूँ कि सबसे जोरदार कोई जबान है तो वह प्यार की है। बाकी हिंदी, अंग्रेजी, चीनी, रूसी, जापानी फ्रेंच—वगैरह यह सब कमजोर जबानें हैं। हिन्दुस्तान के बाहर के लोग यहाँ इसीलिए तो आते हैं कि यहाँ प्यार से माँगा जाता है और प्यार से दिया जाता है। यही देखकर उनकी आँखों को ठंडक पहुँचती है।

प्यार का संदेश

यह ऊधमपुर जिला है। आप लोग यहाँ जमीन के लिए खूब ऊधम मचाइये। इस जिले में जब तक हर बेजमीन को जमीन नहीं मिले, तब तक आपको खूब ऊधम मचाना चाहिए। इसके लिए आप गाँव-गाँव और घर-घर जाइये। गाँव-गाँव में जाकर सुबह यह गाना गाइये 'हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।' दिनभर काम करके, बेजमीन को जमीन दिलवाइये और शाम को यह गाना गाइये 'हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहा, कोई न रहा।' यही हमारा आपके लिए प्यार का संदेश है।

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

कटरा (जम्मू) ५-८-'५९

भारत का काम करने का अपना एक तरीका है !

अभी रियासी, जो कि इस जिले का पुराना गाँव है, से लोग मिलने आये थे। वे चाहते थे कि हम उनके गाँव जायँ। हिन्दुस्तान में ५ लाख गाँव हैं। हर गाँव में हम नहीं जा सकते, लेकिन रियासी जा सकते थे। बशर्ते पहले रियासी का कार्यक्रम बना होता। अब नया कार्यक्रम नहीं बन सकता। इसलिए मैं वहाँ नहीं जा सकता। आज वहाँके जो भाई मुझसे मिलने आये थे, उनका स्नेह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

विचार सुनें

आठ साल से लगातार लोगों का स्नेह देख रहा हूँ। बिहार, गुजरात, राजस्थान, कश्मीर आदि सभी जगहों में हजारों भाई-बहन दूर-दूर से आते हैं और बड़े ही प्यार से हमारे विचार सुनते हैं। जैसे कोई प्यासा हो और पानी चाहता हो, वैसे ही वे विचार सुनना चाहते हैं। इसमें शक नहीं कि हिन्दुस्तान में बहुत कुछ हो रहा है। सरकार की ओर से भी हो रहा है। सब चाहते हैं कि देश की तरक्की हो, इसीलिए जगह-जगह तालीम के लिए स्कूल खोलने की माँग होती है। इन्सान जाग रहा है, एशिया जाग रहा है। ऐसे समय में प्यार से विचार सुने जायँ, यह आवश्यक है। विचारों से ही आचार की प्रेरणा होती है।

हिंसा और अहिंसा का नतीजा

अपने देश को आजादी प्राप्त हुई। इस आजादी के हासिल करने का अपना एक नया ढंग था। दूसरे देशों में आजादी पाने के लिए लड़ाइयाँ हुईं। लेकिन हमारे यहाँ लड़ाई नहीं हुई। इटली में बहुत कशमकश चली, तब वह आजाद हुआ। लेकिन आजाद होते ही वह दूसरे देशों को अपने कब्जे में लेने लगा! उसका साम्राज्य बना। यही बात जापान में हुई। जापान की आजादी के लिए हम लोग गाना गाते थे। जब जापान आजाद हुआ, तब हमें बहुत खुशी हुई। वही जापान आजाद होते ही साम्राज्यवादी देश बन गया! उसने दूसरे देशों पर हमला किया। चीन में आज क्या हो रहा है? यह सब इसलिए होता है कि उनका आजादी पाने का तरीका दूसरा था। और वह था हिंसा का। हिंसा का रस उन्हें मिल गया। इसलिए वे अहिंसा का, प्रेम का तत्त्वज्ञान नहीं समझ सके। शेर आदमखोर होता है। वह एक बार आदमी को मारकर खा लेता है, तब उसे आदमी खाने की आदत हो जाती है। वैसे ही, जिसने तलवार से आजादी हासिल की, वह आगे जाकर हमलावर बन जाता है।

हमने गान्धीजी को समझा नहीं

आजादी प्राप्त करने का हिन्दुस्तान का अपना खास तरीका था। यहाँ महात्मा गान्धी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई लड़ी गयी। गान्धीजी अहिंसा में विश्वास करते थे। वे चाहते थे कि हम शुद्ध अहिंसक रहकर आजादी की लड़ाई लड़ें। लेकिन हमने अहिंसा का पूरा-पूरा पालन नहीं किया, टूटा-फूटा पालन किया। वह भी इसलिए कि हम लाचार थे, कमजोर थे, डरपोक थे। अंग्रेजों ने हमारे हाथ से शस्त्र छीन लिये थे। गान्धीजी वीरों की अहिंसा चाहते थे। लेकिन हमने मजबूरी की अहिंसा स्वीकार की। यदि हमने वस्तुतः सच्ची अहिंसा स्वीकार की होती तो आज जो हर क्षेत्र में गिरावट दीख रही है, इन्सानियत लांछित हो रही है, नीति नष्ट हो रही है, वह नहीं होती। आज की हालत दूसरी ही होती। खैर, हमने गान्धीजी को समझा नहीं। अहिंसा को समझा नहीं। फिर भी हमने उन्हें नेता माना और हम उनके पीछे-पीछे गये। इससे हमारा आजादी हासिल करने का तरीका दूसरे देशों से अलग हो गया। यही वजह है कि आजादी प्राप्त करने के बाद भी आज इंग्लैंड और हिन्दुस्तान में दोस्ती है। अगर हमने दूसरे देशों का तरीका अख्तियार कर लिया होता तो यह दोस्ती कैसे रह सकती थी?

अपने देश का तरीका

हिंदुस्तान के लोग अच्छाई की, भलाई की, नीति की बातें समझते हैं और गरीबों के लिए दान देते हैं। इस प्रकार दान देते देखकर पश्चिम के लोगों को अचरज होता है, यही वजह है कि दूर-दूर देशों से लोग हमारे इस काम को देखने के लिए आते हैं और देखते हैं कि यहाँ बिना किसी दबाव के, बिना किसी कानून के लोग प्रेम से दान दे रहे हैं। मैं सिर्फ लोगों को समझाता हूँ और लोग लाखों एकड़ जमीन दान दे देते हैं, यह हिंदुस्तान की अपनी खानदानी है। हिंदुस्तान में नये-नये प्रयोग होते हैं। जो चीज यहाँ एक प्रकार से होती है, वही चीज दूसरे देशों में दूसरे प्रकार से होती है। मिसाल के तौर पर मैंने आजादी की लड़ाई का उल्लेख किया।

दूसरी मिसाल आज मैं जिस आश्रम (योगाश्रम) में बैठा हूँ, वही है। दूसरे देशों में आसन, प्राणायाम वगैरह नहीं होते। वहाँ आरोग्य के लिए फुटबाल खेला जाता है। खेलना आरोग्य-प्राप्ति का एक तरीका है। वह भी अच्छा है, उससे जिंदगी में आनन्द आता है। लेकिन इससे भी बेहतर तरीका आसन, प्राणायाम और कुश्ती का है। यहाँ कुश्ती, मस्ती और सुस्ती, ये तीनों साथ-साथ चलती हैं। कुश्ती करते हैं, दूध-शक्कर पीते हैं और मस्त सो रहते हैं! जो लोग खूब मलाई खाते हैं, उनका शरीर फूल जाता है, जैसे फूली हुई लौकी पानी में तैरती है, वैसे ही वे लोग मोटे-ताजे बनते हैं और आसानी से तैरते हैं।

[चालू]

अनुक्रम

१. प्यार है बिजली, एतबार है बटन, उसे दबाइये तो सही !
सिंगपुर ३१ जुलाई पृष्ठ ६७५
२. कुएँ का पानी खेत में पहुँचने से पहले ही नाली में सूख रहा है.
गढ़ी ४ सितम्बर '५९ " ६७६
३. पूरा गाँव एक होकर कोशिश करे तो गरीबी खत्म हो जायगी.
चपियाड़ी ३१ अगस्त '५९ " ६७८
४. दुनिया में सियासत से नहीं, प्यार से ही अमन कायम होगा.
कुद ३० अगस्त '५९ " ६८०
५. भारत का काम करने का अपना एक तरीका है !
कटरा ६ सितम्बर '५९ " ६८२

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in